अलंकार

अलंकार के भेद उपभेद	पहचान	उदाहरण
1. शब्दालंकार	वर्णों, शब्दों के कारण सौन्दर्य	
(i) अनुप्रास	वर्ण की आवृत्ति	1. तरनि तनुजा तट तमाल तरुवर बहु छाए ('त' वर्ण की आवृत्ति) 2. कालिंदी कूल कदंब की डारन ('क' वर्ण की आवृत्ति)
(ii) यमक	किसी शब्द की आवृत्ति हो लेकिन अर्थ में भिन्नता हो	1. काली घटा का घमण्ड घटा (घटा–घटाएँ, कम होना) 2. है कवि बेनी, बेनी ब्याल की चुराई लीन्ही। (बेनी—कवि का नाम, चोटी)
2. अर्थालंकार	अर्थ के कारण सौन्दर्य	
(i) उपमा	दो भिन्न वस्तुओं में तुलना	1. निर्मल तेरा नीर अमृत सम उत्तम है। (नीर की अमृत से तुलना) 2. नागिन–सा रूप तेरा। (नागिन के रूप से तुलना)
(ii) रूपक	उपमेय और उपमान में अभिन्नता या अभेद	1. चरण कमल बंदौ हरिराई (चरण और कमल में अभिन्नता) 2. मैया मैं तो चन्द्र खिलौना लैहों (चन्द्र और खिलौना में अभिन्नता)
(iii) अतिश्योक्ति	बात को बढ़ा–चढ़ा कर कहना	1. तुम्हारी यह दंतुरित मुस्कान मृतक में भी डाल देगी जान। (दंतुरित मुस्कान का बढ़ा–चढ़ा कर वर्णन) 2. काँच को करके दिखा देते हैं वे उज्ज्वल रतन। (पराक्रम का बढ़ा–चढ़ा कर वर्णन)
(iv) मानवीकरण	प्राकृतिक वस्तुओं को मानवीकृत करना	1. मेघ आए बन–ठन के संवर के (मेघ द्वारा सजना–संवरना) 2. अम्बर पनघट में डुबो रही, ताराघट उषा नागरी (उषा का स्त्री रूप में मानवीकरण)

अध्याय 5 अलंकार

स्मरणीय बिंदु

अलंकार— अलंकार का शाब्दिक अर्थ है— आभूषण। जिस प्रकार आभूषण नारी की सुन्दरता बढ़ाते हैं, उसी प्रकार अलंकार से कविता की शोभा बढ़ती है अर्थात् शब्द तथा अर्थ की जिस विशेषता से काव्य का शृंगार होता है, उसे अलंकार कहते हैं। अलंकार शास्त्र में आचार्य भामह ने इसका विस्तृत वर्णन किया है। वे अलंकार सम्प्रदाय के प्रवर्तक कहे जाते हैं।

अलंकार के भेद—अलंकार को मुख्यत: दो भागों में बाँटा जाता है— **(i)** शब्दालंकार **(ii)** अर्थालंकार

1. शब्दालंकार—जो अलंकार शब्दों के माध्यम से काव्य को अलंकृत करते हैं, वे शब्दालंकार कहलाते हैं। ये वर्णगत, शब्दगत या वाक्यगत होते हैं।

शब्दालंकार के भेद—शब्दालंकारों के मुख्यत: तीन भेद होते हैं—

(क) अनुप्रास अलंकार, **(ख)** यमक अलंकार,

(क) अनुप्रास अलंकार—काव्य को सुन्दर बनाने के लिए जहाँ किसी वर्ण की आवृत्ति होती है, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।

(अ) **म**धुर **मृ**दु **मं**जुल **मु**ख **मु**सकान।

'म' वर्ण की आवृत्ति से अनुप्रास अलंकार है।

(ब) **सु**रुचि **सु**वास **स**रस अनुरागा।

'स' वर्ण की आवृत्ति से अनुप्रास अलंकार है।

(ख) यमक अलंकार—यमक अर्थात् 'युग्म'। जब एक शब्द की दो या दो से अधिक बार आवृत्ति होती है और अर्थ हर बार भिन्न-भिन्न होते हैं; उसे यमक अलंकार कहते हैं। जैसे—

(अ) **कनक कनक** ते सौ गुनी मादकता अधिकाय।

या खाये बौराय जग वा पाये बौराय॥

यहाँ 'कनक' शब्द की दो बार आवृत्ति है तथा 'कनक' के दो अर्थ हैं—धतूरा एवं सोना, अत: यहाँ यमक अलंकार है।

(ब) वह बाँसुरी की धुनि **कानि** परे,

कुल **कानि** हियो तजि भाजति है।

यहाँ 'कानि' शब्द की दो बार आवृत्ति है। प्रथम 'कानि' का अर्थ 'कान' तथा दूसरे 'कानि' का अर्थ 'मर्यादा' है, अत: यमक अलंकार है।

2. अर्थालंकार — अर्थालंकार की निर्भरता शब्द पर न होकर शब्द के अर्थ पर आधारित होती है अर्थात् जब किसी वाक्य का सौन्दर्य उसके अर्थ पर आधारित होता है, वहाँ अर्थालंकार होता है।

अर्थालंकार के भेद—अर्थालंकार के मुख्यत: पाँच भेद होते हैं—

(क) उपमा **(ख)** रूपक **(ग)** अतिशयोक्ति **(घ)** मानवीकरण।

(क) उपमा अलंकार—उपमा अर्थात् तुलना या समानता उपमा में उपमेय की तुलना उपमान से गुण, धर्म या क्रिया के आधार पर की जाती है।

(i) उपमेय—वह व्यक्ति या वस्तु जिसकी उपमा दी जाए।

(ii) उपमान—वह प्रसिद्ध व्यक्ति या वस्तु जिससे उपमा या तुलना की जाए।

(iii) समानतावाचक शब्द—जैसे, ज्यों, सम, सा, सी आदि।

(iv) समान धर्म—वह शब्द जो उपमेय व उपमान की समानता को व्यक्त करने वाले होते हैं।

उदाहरण—(i) प्रातः नभ था, बहुत नीला शंख जैसे।

यहाँ उपमेय—नभ, उपमान—शंख

समानतावाचक शब्द—जैसे, समान धर्म-नीला

इस पद्यांश में 'नभ' की उपमा 'शंख' से दी जा रही है, अतः उपमा अलंकार है।

(ii) मधुकर सरिस संत, गुन ग्राही।

यहाँ उपमेय—संत, उपमान—मधुकर

समानतावाचक शब्द—सरिस

समान धर्म—गुन ग्राही

संतों के स्वभाव की उपमा मधुकर से दी गई है, अतः उपमा अलंकार है।

(ख) रूपक अलंकार—इसमें उपमेय पर उपमान का अभेद आरोप किया जाता है। जैसे—

(i) आए महंत बसंत।

यहाँ बसंत पर महंत का आरोप होने से रूपक अलंकार है।

(ii) बंदौ गुरुपद पदुम परागा।

इस पद्यांश में गुरुपद में पदुम (कमल) का आरोप होने से रूपक अलंकार है।

(ग) अतिशयोक्ति अलंकार—जब किसी बात को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर कहा जाए तो अतिशयोक्ति अलंकार होता है।

उदाहरण—हनुमान की पूँछ में, लग न पाई आग।

लंका सिगरी जरि गई, गए निशाचर भाग॥

इस पद्यांश में हनुमान की पूँछ में आग लगने के पहले ही सारी लंका का जलना और राक्षसों के भाग जाने का बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन किया है, अतः अतिशयोक्ति अलंकार है।

(घ) मानवीकरण अलंकार—जहाँ कवि काव्य में जड़ पदार्थों, भाव या प्रकृति को मानवीकृत कर दे, वहाँ मानवीकरण अलंकार होता है। जैसे—

(i) बीती विभावरी जाग री।

अंबर पनघट में डुबो रहीं, ताराघट उषा नागरी।

यहाँ उषा (प्रातः) का मानवीकरण कर दिया गया है। उसे स्त्री रूप में वर्णित किया गया है, अतः मानवीकरण अलंकार है।

(ii) तुम भूल गए क्या मातृ प्रकृति को
तुम जिसके आँगन में खेले-कूदे,
जिसके आँचल में सोए जागे।

यहाँ प्रकृति को माता के रूप में मानवीकृत किया गया है, अतः मानवीकरण अलंकार है।

अभ्यास प्रश्न (प्रत्येक 1 अंक)

निम्न प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए—

1. 'परहित सरिस धरम नहिं भाई।' में प्रयुक्त अलंकार को पहचानकर नाम लिखिए— 1

(क) उपमा **(ख)** रूपक

(ग) उत्प्रेक्षा **(घ)** यमक

2. 'रघुपति राघव राजा राम।' में प्रयुक्त अलंकार को पहचानकर नाम लिखिए— 1

(क) श्लेष **(ख)** उत्प्रेक्षा

(ग) अनुप्रास **(घ)** उपमा

3. 'हाय! फूल-सी कोमल बच्ची हुई राख की थी ढेरी' में अलंकार है— 1

(क) उपमा **(ख)** रूपक

(ग) उत्प्रेक्षा **(घ)** पुनरुक्ति

4. 'मेघ आए बड़े बन ठन के सँवर के।' में अलंकार है— 1

(क) उपमा (ख) यमक

(ग) मानवीकरण (घ) श्लेष

AI 5. 'कनक-कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय' में अलंकार है— 1

(क) अनुप्रास (ख) यमक

(ग) उपमा (घ) श्लेष

6. 'मैया मैं तो चन्द्र खिलौना लैहों' में अलंकार है— 1

(क) उपमा (ख) रूपक

(ग) उत्प्रेक्षा (घ) मानवीकरण

7. 'नदियाँ जिनकी यशधारा सी' में अलंकार है— 1

(क) उपमा (ख) मानवीकरण

(ग) उत्प्रेक्षा (घ) अतिशयोक्ति

8. 'वह दीप शिखा-सी शांत भव में लीन' में अलंकार है— 1

(क) अनुप्रास (ख) श्लेष

(ग) उपमा (घ) उत्प्रेक्षा

AI 9. 'दृग-पग पोंछन को करे भूषन पायंदाज' में अलंकार है— 1

(क) उपमा (ख) रूपक

(ग) उत्प्रेक्षा (घ) अतिशयोक्ति

10. 'एक सुंदर सीप का मुँह था खुला' में अलंकार है— 1

(क) अनुप्रास (ख) यमक

(ग) रूपक (घ) उपमा

AI 11. 'वह इष्टदेव के मंदिर की पूजा-सी' में अलंकार है— 1

(क) श्लेष (ख) उपमा

(ग) रूपक (घ) उत्प्रेक्षा

12. 'संसार की समर-स्थली में धीरता धारण करो' में अलंकार है— 1

(क) उपमा, रूपक (ख) अनुप्रास, रूपक

(ग) श्लेष, उत्प्रेक्षा (घ) उत्प्रेक्षा रूपक

AI 13. 'नभ पर चमचम चपला चमकी' में अलंकार है— 1

(क) अनुप्रास (ख) श्लेष

(ग) उपमा (घ) उत्प्रेक्षा

14. 'खुले कोरे पृष्ठ जैसा वही उज्जवल वही पारस रूप' में अलंकार है— 1

(क) अनुप्रास (ख) यमक

(ग) उपमा (घ) उत्प्रेक्षा ?

15. 'निर्धन के धनी-सी तुम आई' में अलंकार है— 1

(क) श्लेष (ख) रूपक

(ग) उत्प्रेक्षा (घ) उपमा

AI 16. 'तरनि-तनुजा-तट तमाल तरुवर बहु छाए' में अलंकार है— 1

(क) रूपक (ख) उत्प्रेक्षा

(ग) श्लेष (घ) अनुप्रास

17. **भजन कह्योताते भज्यौ, भज्यौ न एको बार।**
दूर भजन जासो कह्यो, सो तू भज्यौ गँवार ॥ 1

(क) रूपक **(ख)** यमक

(ग) अनुप्रास **(घ)** श्लेष

18. **'कालिन्दी कूल कंदब की डारन' में अलंकार है—** 1

(क) अनुप्रास **(ख)** यमक

(ग) श्लेष **(घ)** ये सभी

19. **'असंख्य कीर्ति रश्मियाँ विकीर्ण दिव्य दाह सी' में अलंकार है—** 1

(क) उत्प्रेक्षा **(ख)** उपमा

(ग) रूपक **(घ)** मानवीकरण

20. **यमक अलंकार का उदाहरण है—** 1

(क) सुरुचि सुवास सरस अनुरागा **(ख)** कोलाहल बैठा सुस्ताने

(ग) कनक-कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय **(घ)** हरिपद कोमल कमल से

21. **'मन-सागर मनसा लहरें बूड़े-बहे अनेक' में अलंकार है—** 1

(क) उपमा **(ख)** रूपक

(ग) उत्प्रेक्षा **(घ)** श्लेष

22. **'हनुमान की पूँछ में लगन न पाई आग। लंका सिगरी जरि गई, गए निशाचर भाग' में अलंकार है—** 1

(क) अनुप्रास **(ख)** उपमा

(ग) अतिशयोक्ति **(घ)** मानवीकरण

23. **'तेरी बरछी ने बर छीने है खलन के' में अलंकार है—** 1

(क) श्लेष **(ख)** यमक

(ग) अनुप्रास **(घ)** रूपक

24. **'दीपक-सा जलना होगा' में अलंकार है—** 1

(क) श्लेष **(ख)** अनुप्रास

(ग) उपमा **(घ)** रूपक

उत्तर

1. **(क)** उपमा
2. **(ग)** अनुप्रास
3. **(क)** उपमा
4. **(ग)** मानवीकरण
5. **(ख)** यमक
6. **(ख)** रूपक
7. **(क)** उपमा
8. **(ग)** उपमा
9. **(ख)** रूपक
10. **(क)** अनुप्रास
11. **(ख)** उपमा
12. **(ख)** अनुप्रास, रूपक
13. **(क)** अनुप्रास
14. **(ग)** उपमा
15. **(घ)** उपमा
16. **(घ)** अनुप्रास
17. **(ख)** यमक
18. **(क)** अनुप्रास
19. **(ख)** उपमा
20. **(ग)** कनक-कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय
21. **(ख)** रूपक
22. **(ग)** अतिशयोक्ति
23. **(ख)** यमक
24. **(ग)** उपमा

❐❐